ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

## अन्दर के पृष्ठों में...

एसजेवाई ने दिया
पुतुल को नया जीवन
(पृष्ठ – 02)

स्वरोजगार से संगीता ने पाया
स्वावलंबन का मंत्र
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

# एक नई राह

माह – दिसम्बर 2022 ।। अंक – 17

## एसजेवाई से आर्थिक–सामाजिक सशक्तीकरण की आसान होती राह

बिहार सरकार द्वारा देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री में पारंपरिक रूप से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवारों तथा अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवारों के सतत् आजीविका संवर्द्धन, क्षमता निर्माण एवं वित्तीय सहायता के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण हेतु सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत 26 अप्रैल 2018 को की गयी। योजना को सरजमीं पर लाने की जिम्मेदारी जीविका को दी गयी। जीविका द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लक्षित परिवारों का चयन कर उन्हें योजना से जोड़ा गया। योजना से जुड़ाव के बाद लाभार्थियों को आजीविका की गतिविधियों से जोड़कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य किया जा रहा है। योजना का सापेक्षित परिणाम भी अब सामना आने लगा है। कई परिवार गरीबी रेखा से बाहर निकलकर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण की राह पर हैं।

आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण की राह आसान बनाने में सतत् जीविकोपार्जन योजना कई मायनों में कारगर रही है। मसलन इस योजना से जोड़कर सिर्फ गरीबी उन्मूलन की बात नहीं हो रही है बल्कि अन्य सरकारी योजनाओं से जुड़ाव भी इसका मुख्य उद्देश्य है। इस प्रकिया द्वारा लाभार्थियों को बेहतर जीवनयापन के लिए सशक्त किया जा रहा है। स्वावलंबन की राह की ओर अग्रसर करते हुए एसजेवाई दीदियों का राशन कार्ड बनाया जा रहा है। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत हर घर नल जल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, वृद्धावस्था, विधवा एवं विकलांग पेंशन की सुविधा दिलाई जा रही है। साथ ही दीदियों के घरों में शौचालय निर्माण एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना भी कराना सुनिश्चित किया जा रहा है। इन योजनाओ से जुड़कर लाभुकों के जीवन स्तर में काफी बदलाव आया है। आर्थिक सशक्तीकरण के साथ सामाजिक बदलावों ने दीदी एवं उनके परिजनों का भविष्य भी सुरक्षित किया है।

जीविका का प्रयास है कि गरीबी उन्मूलन के साथ–साथ सरकार द्वारा प्रदत योजनाओं एवं सुविधाओं से जोड़कर जीविका दीदियों के जीवन में खुशहाली लाई जाए। अब परिकल्पनाएं सच हो रही हैं, साकार हो रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खुशहाली की मौन क्रान्ति आई है। यही वजह है कि राज्य सरकार भी अपनी योजनाओं को अमली जामा पहनाने के लिए जीविका और जीविका दीदियों की अगुआई को बेहतर नेतृत्व मान रही है। सरकार की विभिन्न योजनाओं को समाज के अंतिम पायदान तक ले जाने में जीविका और जीविका दीदियाँ सक्षम हैं। लिहाजा योजनाएं वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंच कर फलीभूत हो रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने स्वावलंबन की राह तो दिखाई ही है इससे जुड़ी जीविका दीदियाँ विभिन्न योजनाओं से जुड़कर राज्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

# स्वावलंबन की मिसाल बनी रुद्धम

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने राज्य के अत्यंत गरीब परिवारों को आर्थिक संपन्नता की राह दिखाई है। लखीसराय जिला अंतर्गत बड़हिया प्रखंड स्थित निजाय गाँव की रुद्धम देवी भी गरीबी रेखा से बाहर निकलकर आर्थिक संपन्नता की ओर अग्रसर हैं। चार साल पहले पति की मृत्यु के पश्चात रुद्धम दीदी पर तीन बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेवारी आ गई। खेत में मजदूरी करके रुद्धम दीदी अपने बच्चों को दो वक्त का भोजन बामुश्किल मुहैया करा पाती थीं। रुद्धम दीदी की हालात को देखते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में चयनित किया गया। योजना अंतर्गत लक्षित परिवारों के महिला सदस्यों को ही जीविका समूह से जोड़कर लाभान्वित किया जाता है। लिहाजा रुद्धम को जीविका समूह से जोड़ा गया। अनंत जीविका महिला ग्राम संगठन से अनुमोदन के पश्चात माइक्रो प्लानिंग करते हुए रुद्धम दीदी को उनके रूचि के अनुरूप स्वरोजगार हेतु किराना दुकान के लिए एल.आई.एफ़ अंतर्गत 20 हजार रुपये का किराना सामान दिया गया। साथ ही एस.आई.एफ़ का 10 हजार और एल.जी.एफ़ का सात हजार रुपया उपलब्ध करवाया गया। रुद्धम दीदी बताती हैं कि–'दुकान से प्रति दिन 2 से 3 हजार रुपये के सामान की बिक्री हो जाती है जिससे उन्हें प्रति दिन 4 से 5 सौ रुपये का मुनाफा हो जाता है।' इस व्यवसाय से उनकी तस्वीर और तकदीर दोनों बदल गई है। अब उनकी दुकान की कुल परिसंपत्ति लगभग 1 लाख 32 हजार रुपये की है। बैंक में 19 हजार 5 सौ रूपया जमा है। रुद्धम दीदी सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत निर्धारित मापदंडों के तहत ग्रेजुएट दीदी बन गई है। तीनों बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। रुद्धम देवी महिला स्वावलंबन की मिसाल बन गई हैं।

# एसजेवाई ने दिया पुतुल को नया जीवन

यह कहानी खगड़िया जिला अंतर्गत तेतराबाद पंचायत की रहने वाली पुतुल देवी की है। एक समय था जब इनके पास खाने के लिए अनाज तक नहीं था। पति मानसिक रूप से कमजोर थे और दीदी खुद पैर से दिव्यांग है। इन दोनो असहाय दंपत्तियों को दो बेटी एवं एक बेटा है। आर्थिक समस्या के कारण दीदी का जीवन काफी कठिनाईयों के बीच बीत रहा था। दीदी के सामने भविष्य की चिंता भी थी। दिन यही सोच कर गुजर रहा था कि आनेवाले समय में बच्चों का पेट कैसे भरेंगे? पुतुल दीदी जीवन से निराश एवं असहाय हो चुकी थीं।

परन्तु आज वही पुतुल दीदी अपने गांव में एक मिसाल बन चुकी हैं। बिहार सरकार के महत्त्वकांक्षी योजना सतत् जीवीकोपार्जन योजना के तहत इनका चयन एक अत्यंत निर्धन परिवार के रूप में किया गया। दीदी को ग्राम संगठन के द्वारा एक किराने की दुकान खोल कर दिया गया। दीदी काफी उत्साह से दुकान का संचालन करने लगीं। दीदी की मेहनत से उनकी दुकान चल पड़ी। दीदी ने बचत कर के उससे एक सिलाई मशीन खरीदी और सिलाई का भी काम करने लगी। इससे दीदी की आमदनी में बढ़ोत्तरी हुई। अब दीदी की बचत भी दोगुनी हो गयी है।

पुतुल दीदी के परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री जीवन जीवन ज्योति बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति सुरक्षा योजना के तहत बीमा कराया गया। यही नहीं दीदी को अभिसरण के माध्यम से उज्ज्वला योजना, नल–जल योजना एवं इंदिरा आवास योजना से जोड़ा गया। आज दीदी बेहद खुशहाल जीवन व्यतित कर रही हैं। दीदी के तीनों बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। दीदी दिन–रात मेहनत कर रही हैं ताकि उनके बच्चे अच्छी और बेहतर ज़िन्दगी जी सकें। इस योजना से जुड़ने के बाद दीदी को उनके समाज में भी सम्मान और स्थान मिलने लगा है। अपने जीवन में आये इस बदलाव के लिए पुतुल दीदी सतत् जीविकोपार्जन एवं जीविका को दिल से धन्यवाद देती हैं।

## स्वरोजगार से संगीता ने पाया स्वावलंबन का मंत्र

गया के इमामगंज प्रखंड के भवनडीह पंचायत के पसेवा गांव की संगीता देवी शारीरिक रूप से अक्षम होने के बाद भी उनके हौसले किसी से कम नहीं हैं। संगीता अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए लगातार प्रयासरत हैं। ग्राम संगठन के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से संगीता देवी को श्रृंगार का सामान दिलाकर दुकान खुलवाया गया है। संगीता देवी का चयन देशी शराब की बिक्री से जुड़े परिवार के रूप में किया गया है। योजना से प्राप्त पूँजी में क्रमिक वृद्धि करते हुए संगीता देवी निर्धनता से आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ी हैं। इन्हें सरकारी योजना जैसे– जनवितरण प्रणाली, सुरक्षित आवास, स्वच्छ पेयजल, घर में शौचालय का उपयोग आदि का लाभ भी हुआ है। दीदी में आए बदलावों एवं उनके बेहतर व्यवसायिक गतिविधि के कारण मिशन स्वावलंबन के तहत स्वावलंबी बनने का प्रमाण पत्र दिया गया है।

दीदी बताती हैं कि–'उनके पति मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण कोई काम नहीं कर पाते थे। पहले दीदी के परिवार का भरण–पोषण उनके ससुर के द्वारा मजदूरी कर किया जाता था। मजदूरी करने के दौरान ससुर दुर्घटनाग्रस्त हो गए। उनके कमर में भारी चोट लगने के कारण उनकी मजदूरी छूट गई। इस कारण परिवार की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई। जिसके कारण मजबूरन दीदी को शराब बेचने का कार्य शुरू करना पड़ा। राज्य सरकार द्वारा शराब बंदी घोषित होने के बाद दीदी को आय का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। इसी बीच सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से संगीता देवी को उम्मीद की एक नई किरण दिखाई दी।

संगीता देवी अपने घर पर श्रृंगार का सामान बेचती हैं और उनके ससुर किराना दुकान चलाने में दीदी की मदद करते हैं। वर्त्तमान में दुकान से दीदी 5,000 से 6,000 रुपया मासिक की आमदनी कर रही हैं। संगीता देवी ने कुछ पैसे बचाकर एक सिलाई मशीन भी खरीद लिया है, जिससे बचे हुए समय में कपड़ा सिलाई कर भी कुछ आमदनी कर लेती हैं। साथ ही इन्होंने बत्तख पालन भी आरंभ कर दिया है। अपने आत्मविश्वास और मेहनत की बदौलत वह अपने परिवार का भरण पोषण कर रही हैं।

## साहस से धर्मशीला ने पाया सफलता का मुकाम

कैमूर जिला के कुदरा प्रखंड की धर्मशीला कुँवर ने अपने साहस के बल पर सफलता का स्वाद चखा है। दीदी के पति की मौत सांप काटने से हो गई। परिवार की सारी जिम्मेदारी दीदी के कंधों पर आ गयी। तब दीदी ने ठाना कि वह स्वयं मजदूरी करेंगी और अपने परिवार का भरण–पोषण करेंगी। इसके बाद वह मजदूरी कर के अपना परिवार चलाने लगीं तथा समूह में बचत भी करने लगी। अब दीदी की आर्थिक स्थिति में धीरे–धीरे सुधार होने लगा है। इसी बीच बेटी की शादी में दीदी को कर्ज लेना पड़ा। जिससे दीदी की आर्थिक स्थिति और कमजोर हो गई। आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय थी कि दीदी का घर तो मजदूरी से चल जाता था पर बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पा रही थी। आर्थिक मजबूरी के चलते स्कूल के स्थान पर खेतों में काम करते थे।

सतत् जीविकोपार्जन योजना लागु होने पर ड्राइव के दौरान धर्मशीला दीदी का चयन लाभार्थी के रूप में किया गया। सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद से सितंबर 2022 में दीदी का दुकान खुलवाया गया। दीदी का किराना दुकान है। किराना दुकान में दीदी बच्चों के पढ़ने लिखने एवं खेलने का सामान भी बेचती हैं। उनकी दुकान से प्रत्येक दिन 700 से लेकर 1000 तक बिक्री हो जाती है। दुकान खुलने से दीदी का परिवार खुशहाल है और अपने बच्चों को बेहतर तरिके से पढ़ाई लिखाई कराने का प्रयास कर रही हैं। जीविका से जुड़ने पर दीदी की सामाजिक स्थिति भी पहले से बेहतर हुई है। अब लोग दीदी को सम्मान की नजर से देखने लगे हैं और मदद को तैयार हैं। दीदी अपने दुकान के पास ही एक चाय की दुकान खोलना चाहती हैं। इसके साथ ही धर्मशीला अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती है ताकि वे आगे चल कर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। वह अपनी दोनों बेटियों की शादी अच्छे घर में करना चाहती हैं। दीदी आज मुस्कुरा कर आत्मविश्वास के साथ बोलती हैं 'जीविका ने मुझे आत्मनिर्भर बनाया और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया।'

# सतत् जीविकोपार्जन योजना
# जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां

## मास्टर संसाधन सेवियों (एम.आर.पी.) का प्रशिक्षण

सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत चयनित मास्टर संसाधन सेवियों का विभिन्न प्रशिक्षण मोड्यूल पर कुल 39 बैचों का प्रशिक्षण नवम्बर 2022 में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में राज्य के विभिन्न जिलों से कुल 546 एम.आर.पी. को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में भाग लिए एम.आर.पी. को सतत् जीविकोपार्जन योजना, सूक्ष्म नियोजन प्रक्रिया, एसजेवाई अंतर्गत प्रतिवेदनों की एम.आई.एस. में प्रविष्टि, सूक्ष्म रोजगार विकास एवं प्रबंधन के सामान्य नियम, व्यवसाय में जोखिम प्रबंधन, व्यवसाय विविधिकरण, बकरी पालन, गव्य पालन, एस.जे.वाई. अंतर्गत लिखी जाने वाली लेखांकन की पुस्तिका आदि विषयों पर जानकारी दी गयी।

## मनरेगा के साथ अभिसरण से पशु शेड का निर्माण

मुंगेर जिले के धरहरा प्रखण्ड अंतर्गत खोपापर गाँव में सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े 42 परिवारों के लिऐ मनरेगा के साथ अभिसरण द्वारा पशु–शेड का निर्माण करवाया जा रहा है। सभी परिवार अनुसूचित जाति/जनजाति के हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ाव के बाद यह परिवार डेयरी क्लस्टर से जुड़कर दुग्ध उत्पादन एवं बिक्री कर औसतन 6000/– रुपए प्रतिमाह की आमदनी कर रही हैं। योजना से जुड़े लाभार्थियों की आवश्यकता एवं पशुओं को ठंड से बचाने हेतु मनरेगा द्वारा पशु शेड निर्माण का कार्य एक सराहनीय कदम है, इससे पशुओं के उचित देखभाल एवं रख रखाव में सहूलियत होगी।

## 275 लाभार्थियों के बीच परिसंपत्तियों का हस्तांतरण

रोहतास जिले के 50वाँ जिला स्थापना दिवस कार्यक्रम में सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ीं 275 लाभार्थियों को माननीय अतिथियों के द्वारा एकीकृत परिसंपत्तियों के सृजन हेतु कुल 62,01,876 रुपए का चेक प्रदान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय मंत्री, बिहार डॉ. अशोक कुमार चौधरी, श्रीमती अनीता देवी एवं श्री मुरारी गौतम सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं प्रशासनिक पदाधिकारी उपस्थित थे। मौके पर अतिथियों द्वारा जीविका स्टॉल का उद्घाटन एवं निरीक्षण भी किया गया। इसमें सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत नोखा प्रखंड में निर्मित चूड़ियों की प्रदर्शनी लगाकर उसकी बिक्री की गयी।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन, राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी –परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन –परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय